पर्यावरण मित्र
Friends of Environment

Issue# 4 October 2006 to March 2007

President's address

Dear Paryavaran Mitra,

The year 2004 was declared as the 'Water Year' by UNESCO, thus bringing world-wide attention to the burning issue of water scarcity. India has declared 2007 as the water year. First our waters are polluted with a variety of pollutants and then a complete campaign is developed in the name of purification.

15 to 60 meter drop in water level after 1960s has been observed. 16% population of the world lives in India and for whom only 2% earth and 4% water resources are available.

But really, this water is quite sufficient if well managed, conserved and distributed effectively. Then why do we face a water problem? (Read article "Water Crisis" in this newsletter.)

The report from scientists is that 2007 will be a difficult year ahead. The earth's temperature will certainly rise and there will be a subsequent decrease in agricultural production. 40 crore people will be affected by food scarcity, whereas 12 to 30 lacs people will face the wrath of drought.

The Indian government has realised the enormity of water problem for our country and has already provided a large subsidy on rain water harvesting this year.

I request you to promote and publicise such projects in your area and motivate people to conserve water.

With best wishes,

Kiran Bajaj

ikuh ugh cpk;k..

reu dkB egy cuk;]
ukrh ikrk dh [kkfrjA
m|kxk d dey f[kyk;]
ukrh ikrk dh [kkfrjA
bl vkik/kkih e l;kj]
re bru ykpkj g,A
ikuh ugh cpk;k]
ukrh ikrk dh [kkfrjA

& MkO cf)ukFk feJ

You raised castles and mansions for posterity
You built empires of industry for scions to inherit.
This yearning for earning and life's own din.
Didn't let you save any water for your next kith and kin.

- Dr. Buddhinath Mishra

अध्यक्ष का वक्तव्य

प्रिय पर्यावरण मित्र,

यूनेस्को ने वर्ष २००४ को **'जल वर्ष'** घोषित कर सारे संसार का ध्यान इस ज्वलंत समस्या की ओर आकर्षित किया था। वर्ष २००७ को भारत सरकार ने 'जल वर्ष' घोषित किया है। कारण स्पष्ट है कि जल संकट की स्थिति दिनोंदिन भयावह होती जा रही है। पहले तो पानी में जहर मिलाया जा रहा है। फिर उसी की परिशुद्धि के नाम पर एक पूरा बाजार विकसित किया जा रहा है। अजब दुष्चक्र है।

भूजल स्तर में साठ के दशक के बाद १५ से ६० मीटर तक की गिरावट दर्ज की गई है। दुनिया के १६ फीसदी लोग भारत में रहते हैं और उनके लिए विश्व की केवल दो फीसदी भूमि तथा चार फीसदी जल उपलब्ध है।

यदि इस जल का संचयन, प्रयोग और प्रबंधन ठीक से किया जाये तो यहां की जनसंख्या के लिए यह जल पर्याप्त है लेकिन आश्चर्य है कि इस पृथ्वी पर पर्याप्त मात्रा में जल होने के बावजूद लोग पेयजल के लिए संकटग्रस्त हैं। (देखें पत्रिका में उल्लिखित ''जलसंकट'')

वैज्ञानिक इस पर सहमत हैं कि पृथ्वी का तापमान बढ़ेगा। जिससे खेती में गिरावट होगी। ४० करोड़ लोग भुखमरी का शिकार हो सकते हैं। साथ ही १२ से ३० लाख लोग पानी के अकाल के शिकार होंगे।

सरकार ने इस बजट में इसके लिए विशेष प्रावधान किये हैं। रेनवाटर हारवेस्टिंग के लिए सब्सिडी भी दी गई है। मैं आप सबसे निवेदन करती हूं कि अपने–अपने क्षेत्र में इन योजनाओं के प्रचार–प्रसार में सहयोग कर ज्यादा से ज्यादा लोगों को जल के समुचित प्रबंधन के लिए प्रोत्साहित करें। निजी और अपने संस्थान में कम से कम पानी इस्तेमाल करें और पानी का प्रदूषण न होने दें। इतना तो हम कर ही सकते हैं।

इसके लिए जरूरी है स्वयं जागरूक बनें और आम जनता को भी परिचित करायें।

शुभकामनाओं सहित,

किरण बजाज

Important Activities

महत्वपूर्ण गतिविधियाँ

Diseases are increasing with the increase in medicines:

Paryavaran Mitra organized an Environmental Talk with Indian Medical Association and a large number of Doctors of City and District were present.

Doctors expressed their worry on increasing pollution in our environment. In this direction, all doctors were called upon for necessary cooperation.

On this occasion, Dr. Chauhan, President, Indian Medical Association, U.P., stated that "We cannot cure the people only with the medicines; environment, habits and mental status put a great impact on human life. Medicines help in recovering from the disease but if above mentioned are not favourable; one cannot be healthy.

Kiran Bajaj expressed her views regarding the medicines as well as increasing diseases and stated "Doctors can play a significant role in curing of physical, mental and social pollution". On this occasion, Dr. K. M. Agrawal, Chief Medical Officer, Firozabad and Dr. A.K. Ahuja, President, Indian Medical Association, Shikohabad also expressed their views.

Present Physicians *उपस्थित चिकित्सकगण*

Dr. S.P.S. Chauhan expressing his views
अपने विचार व्यक्त करते डा. एस. पी. एस चौहान

Date : 22nd November, 2006. Place : Staff Club, Hind Parisar

Co-organised by : Indian Medical Association (U.P.) and

जितनी दवाइयाँ, उतनी बीमारियाँ :

पर्यावरण मित्र द्वारा इण्डियन मेडिकल ऐसोसिएशन के साथ एक पर्यावरणीय विचार वार्ता का आयोजन किया गया, जिसमें नगर व जनपद के डाक्टरों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

चिकित्सकों ने पर्यावरण में बढ़ रहे प्रदूषण पर चिंता व्यक्त की। इस सम्बन्ध में सहयोग के लिए चिकित्सकों से आह्वान किया गया। इस अवसर पर इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन, उ.प्र. के अध्यक्ष डा. चौहान ने विचार व्यक्त करते हुए कहा–''सिर्फ दवाई से हम, लोगों का स्वास्थ्य नहीं सुधार सकते। पर्यावरण, आदतें एवं मन:स्थिति का मनुष्य के जीवन में बड़ा असर होता है। रोग ठीक करने में दवा मदद करती है किन्तु उपरोक्त सहयोग न होने से ज्यादा दिन स्वस्थ नहीं रहा जा सकता।''

श्रीमती किरण बजाज ने दवाइयों के साथ बढ़ती हुई बीमारियों का उल्लेख करते हुए कहा कि ''चिकित्सक शारीरिक, मानसिक और सामाजिक प्रदूषण दूर करने में प्रभावशाली योगदान कर सकते हैं।'' इस अवसर पर फिरोजाबाद के मुख्य चिकित्साधिकारी डा. के.एम. अग्रवाल, इण्डियन मेडीकल एसोसिएशन, शिकोहाबाद के अध्यक्ष डा. ए. के. आहूजा ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

दिनांक : २२ नवम्बर २००६
स्थान : स्टाफ क्लब, हिन्द परिसर
संयोजन : इण्डियन मेडिकल एसोसिएशन (उ.प्र.) एवं पर्यावरण मित्र

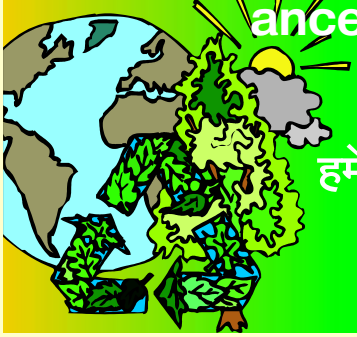

"We do not inherit the earth from our ancestors; we borrow it from our children."

~Native American Proverb

"हमें यह धरती अपने पूर्वजों से विरासत में नहीं मिली है।
बल्कि हमने यह भावी पीढ़ी से उधार में ली है।"

~ अमरीकी कहावत

'Increasing Mental Pollution, an issue of concern' - Subbarao

Paryavaran Mitra organized a meeting in the presence of eminent Sarvodayi and Gandhian Leader Dr. S.N. Subbarao. He expressed his concern over the threat of mental pollution among the youth in the presence of a large gathering of the students from different schools. He regretted that nowadays Television is the study center not school. We are forgetting our culture. He further expressed his concern at the diminishing forest cover., saying that there was about 38 percent forest cover in our country when we achieved independence and now the figure has reduced to a dismal 8 percent. Further, water levels are decreasing day by day. The increasing population of country is also affecting the environment adversely.

Dr. S.N. Subbarao with Children.

He said that the environment is one for the whole world, so now we have to say "Jai Jagat". We have to escape the shackles of racism, religion and language conflicts. He encouraged and motivated all the youth present for the national integrity/unity and lingual unity. On this occasion, he conducted melodious patriotic group songs as well.

Date : 3rd December, 2006
Place : Staff Club, Hind Parisar
Organised by: Paryavaran Mitra

'बढ़ता मानसिक प्रदूषण, चिन्ता का विषय' – सुब्बाराव

पर्यावरण मित्र के तत्वावधान में प्रसिद्ध सर्वोदयी एवं गांधीवादी विचारक डा. एस. एन. सुब्बाराव की विचार वार्ता आयोजित की गयी। विभिन्न विद्यालयों के छात्र–छात्राओं की बड़ी संख्या के बीच, उन्होंने युवाओं को बढ़ते मानसिक प्रदूषण से सावधान किया। उन्होंने खेद प्रकट किया कि अब पढ़ाई का स्थान विद्यालय नहीं टी.वी. है। हम अपनी संस्कृति को बिसरा रहे हैं। देश जब आजाद हुआ था तो ३६ प्रतिशत जंगल थे; अब केवल ८ प्रतिशत रह गये हैं। पानी का स्तर निरन्तर कम होता जा रहा है। देश की बढ़ रही जनसंख्या निरन्तर पर्यावरण को प्रभावित करती जा रही है। उन्होंने उपस्थित युवाओं को राष्ट्रीय एकता, भाषीय एकता के लिए निरन्तर सक्षम रहने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर उन्होने प्रेरक देशभक्ति गीतों का सामूहिक गायन भी करवाया।

बच्चों के साथ डा. एस. एन. सुब्बाराव

पूरे विश्व का पर्यावरण एक है, हमें अब 'जय जगत' का नारा लगाना होगा। जाति–धर्म–भाषा के मनमुटावों से आगे बढ़ना होगा।

दिनांक : ३ दिसम्बर २००६
स्थान : स्टाफ क्लब, हिन्द परिसर
संयोजन : पर्यावरण मित्र

ISO:14001 to Hind Lamps

Hind Lamps Ltd. Shikohabad has been awarded ISO:14001 (EMS) certificate on 5th May, 2007. With this, Hind Lamps will be able to satisfy its those customers who need only ISO:14001 certified products. Also, by observing these norms, Hind Lamps will be able to regulate the use of its resources like water, electricity, gases etc and thus become a pollution-free organisation.

fgUn yEIl dk ISO:14001

fgUn yEIl Hkh ISO:14001 iek.k i= ikdj ^i;koj.k icU/ku i)fr* dk lnL; cu x;kA STQC }kjk ;g iek.k i= fnukd 5 eb 2007 }kjk fn;k x;kA
&bl iek.k i= }kjk fgUn viu mu xkgdk dk lr"V dj ldxk] ftUg i;koj.k icU/ku i)fr l iekf.kr mRikn gh pkfg,A
&bl i)fr dk ykx dju l lLFkku viu ikuh&fo|r&xl vkfn lk/kuk dk mfpr ,o vko';d gh i;x dj in"k.k jfgr lLFkku cu ldxkA

Bio Fertilizer Training Given to Villagers :

A 4-day Biocompost Training Camp was organized with the joint efforts of Khadi Gramodyog commission, Meerut and Paryavaran Mitra.

The training camp was inaugurated by Dr. P.K. Gupta, Dy Director, Firozabad. On this occasion, he emphasized to the farmers that chemical compost could be dangerous for soil. Now in this present status the farmers should use biocompost and biopesticide.

View of Bio-Manure *जैविक खाद का दृश्य*

Dr. Rajeev, Soil Scientist, KVK, Hazratpur enlightened the audience on the importance of biocompost and its significance. Mr. Satish Kumar Sharma, Development Officer (Biotechnology), Khadi Gramodyog commission, Meerut explained that in this training camp training will be given to all participants for increasing the fertility of soil, making of biocompost and its uses. Bank loan facility will also be provided for the smooth functioning of the project." He also explained the various methods of making Bio Fertilizers.

Importance of Bio Fertilizer is being taught by Agricluture Scientist Dr. Rajeev
जैविक खाद के लाभ बताते कृषि वैज्ञानिक डा. राजीव

Mr. B. N. Kardam, District Coordinator, Bank of India, motivated the villagers regarding self-help group formation so that they could earn more in a large-scale production. He also discussed loan schemes, its limit and interest of loan.

Dr. Anokhelal explained in detail the benefits of bio fertilizers in improving the barren land.

At the valedictory session of this training camp Mr. M. Y. Siddiqui, Sub Developmental Officer, Khadi Gramodyog was the chief guest. In this program about 35 villagers from Baah, Ubati, Kalyanpur, Lachhpur, Bateshwar, Nagla Bhoop, Sujawalpur, Nagla Guljari, Nagla Chanda, Bramhabad, Bakalpur, Dahini, Madepura, Khohri, Mewali, Dabrai, Variyarmau etc participated and received training. Dr. Subodh Dubey and Mr. M.Y. Siddiqui jointly distributed the certificates.

Date : 27th January to 30th January 2007
Place : Staff Club, Hind Parisar
Co-organised by : KVIC & Paryavaran Mitra

ग्रामीणों को दिया गया जैविक खाद का प्रशिक्षण

४ दिवसीय जैविक खाद प्रशिक्षण शिविर का आयोजन खादी ग्रामोद्योग आयोग, मेरठ एवं पर्यावरण मित्र के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

शिविर का उद्घाटन उप कृषि निदेशक, फिरोजाबाद डा. पी. के. गुप्ता ने किया। इस अवसर पर उन्होंने किसानों का आह्वान किया कि रासायनिक खाद से खेती को हो रही हानि को समझते हुए अब वक्त आ गया है कि किसान भाई अधिक से अधिक खेती में जैविक खाद सहित जैविक कीटनाशक का प्रयोग करें।

कृषि विज्ञान केन्द्र हजरतपुर के कृषि विज्ञानी डा. राजीव ने किसानों को जैविक खाद की उपयोगिता तथा उसके महत्व पर प्रकाश डाला।

खादी ग्रामोद्योग आयोग मेरठ के विकास अधिकारी (जैव प्रौद्योगिकी) सतीश कुमार शर्मा ने कहा कि इस शिविर के अन्तर्गत भूमि की उर्वरता बढ़ाने तथा जैविक खाद बनाने एवं इसके प्रयोग का प्रशिक्षण दिया जायेगा। इस परियोजना को चलाने के लिए बैंक ऋण की भी सुविधा होती है। उन्होंने ग्रामीणों को जैविक खाद बनाने के विभिन्न तरीके बताये।

बैंक ऑफ इण्डिया के जिला समन्वयक बी. एन. कर्दम ने ग्रामीणों को स्वयं सहायता समूह बनाकर अपने स्वयं के लघु उद्योग जिसमें बड़े स्तर पर जैविक खाद का उत्पादन भी हो सकता है, उस मद में बैंक से ऋण लेकर इस दिशा में आगे बढ़ने की सलाह दी, इसी प्रकार उन्होंने बताया कि नाबार्ड से विभिन्न प्रकार के ग्रामोद्योग चलाने के लिए व्यक्तिगत एवं समूह को ३ लाख तक अनुदान मिल सकता है और खादी ग्रामोद्योग के सहयोग से अनुदान लेने पर ब्याज में ४ प्रतिशत की छूट का लाभ भी मिलता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र हजरतपुर के डा. अनोखेलाल ने बंजर भूमि सुधार के लिए जैविक प्रयोग के माध्यम से सुधार के बारे में विस्तार से कृषकों को बताया।

कार्यक्रम के समापन में खादी ग्रामोद्योग के उपविकास अधिकारी एम. वाई. सिद्दीकी विशेष रूप से उपस्थित हुए। कार्यक्रम में बाह, ऊबटी, कल्याणपुर, लाछपुर, बटेश्वर, नगला भूप, सुजावलपुर, नगला गुलजारी, नगला चंदा, ब्रह्माबाद, बाकलपुर, डाहिनी, मढ़ेपुरा, खोहरी, मेवली, दबरई, वरियारमऊ आदि ग्रामों के लगभग ३५ किसानों ने भाग लेकर अपना पंजीकरण कराया। एम. वाई. सिद्दीकी एवं डा. सुबोध दुबे ने संयुक्त रूप से प्रमाण पत्र वितरित किये।

दिनांक : २७ जनवरी से ३० जनवरी २००७
स्थान : स्टाफ क्लब, हिन्द परिसर
संयोजन : खादी ग्रामोद्योग आयोग, मेरठ एवं पर्यावरण मित्र

Street Play by
N.C.C. Cadets, Lucknow
नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति देतीं
एन. सी. सी. लखनऊ की छात्राएं

Date : 2nd November, 2006
Place : Staff Club, Hind Parisar
Co-organised by : N.C.C. (Lucknow & Shikohabad) and Paryavaran Mitra

दिनांक : २२ नवम्बर २००६
स्थान : स्टाफ क्लब, हिन्द परिसर
संयोजन : एन. सी. सी. (लखनऊ एवं शिकोहाबाद)तथा पर्यावरण मित्र

World Pollution Eradication Day: विश्व प्रदूषण निवारण दिवस:

Painting competition in Bright Scholar's Academy, Sirsaganj
ब्राइट स्कॉलर्स एकेडमी, सिरसागंज में पेन्टिंग प्रतियोगिता

Girls of Jasrana P.G. Colleges participating in Pollution Eradication Rally on World Pollution Day
प्रदूषण निवारण रैली निकालतीं जसराना के महाविद्यालयों की छात्राएं

Date : 2nd December, 2006
Place : Jasrana, Western U.P.
Co-organised by : Lok Rashtriya P.G. College and Paryavaran Mitra

दिनांक : २ दिसम्बर २००६
स्थान : जसराना, पश्चिमी उत्तर प्रदेश
संयोजन : लोक राष्ट्रीय डिग्री कॉलेज एवं पर्यावरण मित्र

Tree Plantation :
वृक्षारोपण :

If you wash your own car, park on the grass so that you will be watering it at the same time.

PMP Nagpur organized a tree plantation programme jointly with Patwardhan High School & Forest Department. This was carried out by Mr. Bhangu's method of root watering.

पर्यावरण मित्र परिवार नागपुर *ने पटवर्धन हाईस्कूल और वनविभाग के संयुक्त सहयोग से वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया जो कि श्री भान्गू की जड़ सिंचयन विधि पर आधारित था।*

To cook 1 cup of rice you need 2 cups of water but to wash the pan in which it has been cooked you need 4-5 litres of water.

PMP Hind Lamps organized a Tree Plantation program in Kamalnayan Kanan on 23rd January, 2007 in which ten trees were planted by Students of Shiksha Prakashalaya.

पर्यावरण मित्र परिवार हिन्द लैम्प्स *द्वारा २३ जनवरी २००७ को कमलनयन कानन में वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। शिक्षा प्रकाशालय के छात्र–छात्राओं द्वारा दस पेड़ लगाए गश।*

Other Adopted Methods

- Paryavaran Mitra Pariwar Patna, Kolkata, Bhubaneswar and Guwahati distributed Leaflets.
- Awareness programmes organised by Paryavaran Mitra Pariwar Guwahati at Expo-2006, by Kochi on 24th November, 2006, by Lucknow and Patna in Red hills School and Christ Mission School, by Bhubneswar Pariwar in Shree Ram Mandir, by Kolkata in 20th Industrial India Trade Fair at Salt Lake.

अन्य गतिविधियाँ :

- i;koj.k fe= ifjokj iVuk] dkydkrk] Hkou'oj rFkk xokgkVh }kjk iEiyV forj.k fd;k x;kA
- i;koj.k fe= ifjokj xokgkVh }kjk ,Dlik&2006 ij] dkphu }kjk 24 uoEcj 2006 dk] y[kuÅ ,o iVuk }kjk jMfgYl Ldy ,o ØkbLV fe'ku Ldy e] Hkou'oj }kjk Jhjke efUnj e] dkydkrk }kjk 20o Hkkjrh; vk|kfxd 0;kikj eyk] lkYVyd e tkx:drk dk;Øe आयोजित fd;x;A

Oxygen is the Nutrient of Soul : Kiran Bajaj

"World Forest Day" was celebrated by a Tree Plantation programme in 'Kamalnayan Kanan'.

Kiran Bajaj interacted with the children on the topic of 'Benefits of Trees'.

She said ancient saints gained knowledge under trees because trees are the source of pranvayu "Oxygen". Oxygen saves human life. She said one who gives is "Devta". Trees give us Oxygen. Hence they are "Dev" (Deities).

She motivated all the children to take an oath for saving trees and forest to save not only our own Country but the whole Universe. She said trees are most important for human life. So we should save trees under all circumstances.

The Officers, Staff and Teachers of Shiksha Prakashalaya and Little Lamps were present at the function. Tree songs were sung by students of Shiksha Prakashalaya.

Date : 21st March 2007
Place : Kamalnayan Kanan, Hind Parisar.
Organised by : Paryavaran Mitra

''वृक्ष हमें प्राणवायु देते हैं'': किरण बजाज

हिन्द परिसर में 'विश्व वानिकी दिवस' कमलनयन कानन में वृक्षारोपण कर मनाया गया।

किरण बजाज ने अपने वक्तव्य में पेड़ों से होने वाले लाभों को बताते हुए कहा कि ''पेड़ों से ऊर्जा प्राप्त होती है। आदिकाल में हमारे ऋषि-मुनि आदि भी ज्ञान प्राप्ति के लिए पेड़ों के नीचे ही समाधि लगाते थे। क्योंकि पेड़ों से निकलने वाली प्राणवायु आत्मा का पोषण करती है। वायु में इतनी शक्ति होती है जो कि जीवन को बचा सकती है।'' उन्होंने बच्चों से संवाद शैली में बातचीत की। उन्होंने कहा ''जो देता है वह देवता है। वृक्ष हमें प्राणवायु देता है इसलिए वह देवता है।''

उन्होंने बच्चों से ब्रह्मांड और देश बचाने के लिए वृक्षों को बचाने की सौगन्ध दिलाई और कहा वृक्ष मनुष्य जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं अत: हमें हर हाल में वृक्ष बचाने चाहिए।

कार्यक्रम में हिन्द लैम्प्स अधिकारीगण, शिक्षा प्रकाशलय एवं लिटिल लैम्प्स स्कूल के शिक्षकगण एवं विद्यार्थी काफी संख्या में उपस्थित थे। छात्र-छात्राओं ने वृक्ष देव की महिमा का गायन किया।

दिनांक : २१ मार्च २००७
स्थान : कमलनयन कानन, हिन्द परिसर
संयोजन : पर्यावरण मित्र

Kachnaar trees in Hind Lamps Parisar

Hind Parisar is very rich in its own vegetation and birds. There are more than 100 types of trees-plants and varied species of birds all over the place. One such tree is that of Kachnaar.

Kachnaar is the local Indian name for a variety of medium size deciduous trees of the Bauhinieae plant family found abundantly in Haryana.. The Kachnaar tree is also known by local names like Karal, Kanalla, Kandla, etc. It is an ornamental tree with drooping branches. It produces a rich harvest of light purple and white blossoms in February-March. The Kachnaar is a good species for planting in open wastes as well as vacant dividing butts and bunds of agricultural holdings.

For Amaltas, see page 15

हिंद परिसर में कचनार

हिंद लैम्प्स परिसर में अपने ही पेड़ -पौधों और पक्षियों की अनेक जातियां-प्रजातियां हैं। इन्ही में से एक है-कचनार। वनस्पतिशास्त्र के अनुसार ;g ckfgfu;kb ifjokj dk] dfVcU/kh; tyok; e mxu okyk e/;e vkdkj dk 'kkHkkdkjh o{k gA o l rk ;g lEi.k Hkkjr e gkrk g yfdu e[;r% ;g gfj;k.kk e ik;k tkrk gA bl djy] duYyk] dUMyk vkfn ukek l Hkh tkuk tkrk gA ;g ,d l tkoVh o{k g ftl dh 'kk[kk, nj rd [kyrh gb fxjrh gA Qjojh&ekp ekg e bl dh 'kk[kk, lQn o gYd cxuh jxk d Qyk l Hkj tkrh gA bl itkfr dk mi;kx fjDr LFkkuk] [krk dh eMk dk ckVu rFkk [ky ,o cdkj iM LFkkuk dk Hkju e fd;k tkrk gA

Competitions on World Forest Day

A Painting Competition was organised on the topic of "Save Tree & Forest" in Lord Krishna Public School, Shikohabad on World Forest Day. In the Competition a total of 90 students of Class Nursery to 5 participated.

विश्व वानिकी दिवस पर प्रतियोगिताएं

विश्व वानिकी दिवस के अवसर पर शिकोहाबाद नगर के लार्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल में 'वृक्ष रक्षा एवं वानिकी संवर्धन' विषय पर पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें नर्सरी से पांचवी तक के कुल ९० बच्चों ने भाग लिया।

Awareness Programmes जागरूकता कार्यक्रम

Avoid over watering your lawn. Most of the year, lawns only need one inch of water per week.

PMP Noida carried out wall painting of Paryavaran messages in Rishikesh.

***पर्यावरण मित्र परिवार नोयडा** ने ऋषिकेश में गंगा के तट पर पर्यावरण संदेश दीवार लेखन कराया।*

Chandigarh PMP in Jan 2007 took out Paryavaran Awareness Rally in village Pabahat, Zirakpur to spread awareness on cleanliness and sanitation for protection of environment.

***पर्यावरण मित्र परिवार चण्डीगढ़** द्वारा जनवरी २००७ में ग्राम पाबहट, जिराकपुर में पर्यावरण की स्वच्छता एवं सुरक्षा के लिए पर्यावरण चेतना रैली निकाली गई।*

Choose appliances that are more energy and water efficient.

Rally & Roadshows – Hyderabad and Lucknow Pariwars of Paryavaran Mitra organised Rallies & Roadshows to create awareness regarding environment. Banners were displayed and leaflets were distributed.

***रैली एवं मार्ग प्रदर्शन :** पर्यावरण मित्र हैदराबाद एवं लखनऊ परिवारों ने रैली एवं मार्ग प्रदर्शन कर पर्यावरण जागृति फैलाई। बैनर प्रदर्शन तथा पत्रक वितरित किये गये।*

"Water is life's matter and matrix, mother and medium. There is no life without water."

-Albert Szent-Gyorgyi

Kiran Bajaj talking with rural women.

ग्रामीण महिलाओं के समक्ष अपने विचार प्रकट करतीं किरण बजाज।

Date : 23rd March 2007
Place : Hind Awasiya Colony
Organised by : Paryavaran Mitra

दिनांक : २३ मार्च २००७
स्थान : हिन्द आवासीय कॉलोनी
संयोजन : पर्यावरण मित्र

Awareness was created in N.C.C. Cadets and Rally was Organised:

An N.C.C. camp was organized at Mandai village in which about 600 cadets came from Mainpuri, Agra, Mathura, Etawah, Firozabad. Paryavaran Mitra conducted daily visits at this village to discuss with cadets the issue of conservation of environment. Their questions regarding environmental degradation and conservation were answered and all cadets were motivated for environmental conservation.

A rally "Save Environment" was organized at Mandai village. Local people, students and villagers were motivated towards preservation of environment and it was emphasised that the use of tobacco, Gutkha, polythene is dangerous for our existence and environment so their use should be prohibited.

Date : 22nd December 2006
Place : Village Madai
Co-organised by: Paryavaran Mitra and N.C.C.

एन. सी. सी. कैडेट्स को किया जागरूक, रैली निकाली गयी:

दिनांक १२. १२. ०६ से दिनांक २५. १२. ०६ तक ग्राम माँड़ई में मैनपुरी, आगरा, मथुरा, इटावा, फिरोजाबाद के एन. सी. सी. कैडेट्स का शिविर आयोजित किया गया। इसमें लगभग ६०० छात्र–छात्रायें थे। 'पर्यावरण मित्र' ने प्रतिदिन जाकर कैडेट्स से पर्यावरण रखरखाव की चर्चा की। उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया तथा उनका आह्वान किया कि वे जब वापिस अपने–अपने कॉलेजों, विद्यालयों, शहरों, मुहल्लों, कॉलोनी में जायें तो अपने–अपने स्तर से जो भी सम्भव हो, पर्यावरण के लिए करें।

दिनांक २२ दिसम्बर को एक ''पर्यावरण बचाओ'' रैली ग्राम मांड़ई में निकाली गयी। स्थानीय ग्रामवासियों को तम्बाकू, गुटखा, पॉलीथिन का प्रयोग न करने तथा जैविक खेती करने के लिए उन्हें जागरूक किया गया। पर्यावरण की ओर से जैविक खाद, वृक्षारोपण आदि सभी सम्भव सहायता देने का आश्वासन भी दिया गया।

दिनांक : २२ दिसम्बर २००६
स्थान : ग्राम मांड़ई
संयोजन : पर्यावरण मित्र एवं एन. सी. सी.

Every Member of Bajaj Electricals Paryavaran Mitra Pariwar should spread Environmental Awareness:

Dr. Subodh Dubey, Secretary, Paryavaran Mitra gave a presentation on the on-going activities and future plans of Paryavaran Mitra to an audience of Bajaj Electricals Paryavaran Mitra Family who came from its different centers throughout India.

Dr. Subodh Dubey making a Presentation to Bajaj Electricals PMP's
विचार व्यक्त करते डा. सुबोध दुबे

He told to Bajaj Paryavaran Mitras "Today our environment is more polluted than ever before. We will be leaving behind a highly polluted environment for our next generation if we do not bring awareness. He also emphasized the need for water conservation. Due to increasing water pollution, the scarcity of drinking water is increasing day by day. He also discussed the scenario when drinking water would be so scarce as to be hardly available.

In this program Mr. C.G.S. Mani, Mr. Rohit Kumar from Mumbai, Mr. G.K. Aithal and Mr. Dayanand Kulkarni from Pune, Mr Shantanu Banerjee from Kolkata, Mr. Jagmohan Madhurai, Mr. Rajkumar from Hyderabad, Mr. Santosh Darad from Patna, Mr. Peter Ramchandran Annadurai and K. Anand from Chennai, Mr. Gaurav Khanna, Mr. Shekhar Shyamal from Chandigargh, Mr. Sanjeev Kumar Mohanti from Bhubaneswar. Mr. Shriniwas, Mr. Murli V.R. from Bangalore, Mr. Anil Yadav from Indore, Mr. Ankur Jain from Noida, Mr. Aswal Sobet Singh, Mr. Mahendra Kumar Sharma from Delhi, Mr. M. S. Ibrahim from Cochin, Mr. Ashutosh Patel from Raipur and Mr. Abhimannu Pandey, Mr. Ashish Kumar Singh from Lucknow participated.

Date : 12th February 2007
Place : Meeting Room, Hind Lamps Ltd.
Organised by : Paryavaran Mitra

बजाज इलेक्ट्रिकल्स पर्यावरण मित्र परिवार जन–जन में फैलाएं पर्यावरण के प्रति जागरूकता:

पर्यावरण मित्र के सचिव डा. सुबोध दुबे ने भारत के कोने–कोने से आये बजाज इलेक्ट्रिकल्स पर्यावरण मित्र परिवार के सदस्यों के समक्ष पर्यावरण मित्र द्वारा अभी तक की गईं तथा की जा रहीं गतिविधियों एवं भविष्य की योजनाओं को इंगित करती पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन का प्रस्तुतिकरण कर पर्यावरण के प्रति जागरूक किया।

उन्होंने बजाज पर्यावरण मित्र परिवार के सदस्यों को बताया कि ''पूर्व समय के अपेक्षाकृत आज हमारा पर्यावरण अत्यधिक दूषित होता जा रहा है और अगर हम आज जागृत नहीं हुए तो हमारी अगली पीढ़ी के लिए हम प्रदूषित पर्यावरण के अलावा कुछ छोड़कर नहीं जायेंगे।'' पानी के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि ''प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिवर्ष जीने के लिए जितना पानी आवश्यक होता है , पीने योग्य उतना पानी वर्तमान समय में भी नहीं रह गया है और अगर इसी तरह प्रदूषण बढ़ता रहा तो आगे का भविष्य बिना पेय पानी के कैसा होगा, इसका अनुमान लगाया जा सकता है।'' उन्होंने सभी उपस्थित सदस्यों से आह्वान किया कि वह जन–जन को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने के लिए आगे आयें।

कार्यक्रम में मुम्बई मुख्यालय के लाइटिंग उपाध्यक्ष सी. जी. एस. मणि, रोहित कुमार, पुणे के जी. के. ऐथल, दयानन्द कुलकर्णी, कोलकाता के शान्तनु बनर्जी, हैदराबाद के जगनमोहन मदुरई, राजकुमार, पटना के संतोश दरद, चेन्नई के पीटर रामचन्द्रन अन्नादुराई, के. आनन्द, चण्डीगढ़ के गौरव खन्ना, शेखर श्यामल, भुवनेश्वर से संजीव कुमार मोहंती, बंगलोर के श्रीनिवास कृष्णजी, मुरली वीआर., इंदौर के अनिल यादव, नोयडा के अंकुर जैन, दिल्ली के अस्वल सोबत सिंह, महेन्द्र कुमार शर्मा, कोचीन के एम. एस. मोहम्मद इब्राहीम, रायपुर के आशुतोष पटेल तथा लखनऊ के अभिमन्यु पाण्डेय, आशीष कुमार सिंह ने भाग लिया।

दिनांक : १२ फरवरी २००७
स्थान : मीटिंग रूम, हिन्द लैम्प्स लि.
संयोजन : पर्यावरण मित्र

Corporate Social Responsibility undertaken by Bajaj Paryavaran Mitra Pariwars :

Bajaj Paryavaran Mitra Pariwars organized the following activities :

- Tree Plantation
- Awareness Programmes- Wall Painting and Rally & Road Shows

बजाज पर्यावरण मित्र परिवारों द्वारा व्यवसाय का सामाजिक उत्तदायित्व:

बजाज पर्यावरण मित्र परिवारों द्वारा निम्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं :

- वृक्षारोपण
- जागरूकता कार्यक्रम के अंतर्गत दीवार लेखन व रैली एवं मार्ग प्रदर्शन

Who will be the owner of water?

Now, our society, government and nature don't have the ownership on water. Its ownership is shrinking in the hands of some people and companies. Government water policies are encouraging water traders. So, because of these reasons our water is sold to us at the rate of milk and these companies like Coke, Pepsi etc are increasing their profit graphs.

At present in our country business of water is increasing day by day. Now it is a Rs. 28000 crores business and it is expected that this business will increase upto twenty times till 2020. So it is more important to stop these activities that are enhancing the privatization of water resources. Beyond the thoughts of trading water and commercialization of water resources, we should think about the preservation and conservation of water resources.

Preservation and conservation of water resources builds the status of water table but it also mitigates water trading. Water conservation and restoration is the task of public-empowerment so the organizations working in this direction like Mahila Mandal, Yuvak Mandal and Paryavaran Mitra should take initiatives involving youth, women and rural mass for the preservaton and conservation of water resources.

So, every member of the society can help with his creative thinking in cooperation with such organizations.

-Rajendra Singh
Recipient of Ramon Magsaysay Award

क्या हमारे पानी पर भी उनका कब्जा होगा?

अब पानी पर समाज, सरकार और सृष्टि का मालिकाना हक नहीं रहा, बल्कि यह कुछ व्यक्तियों और कंपनियां के हाथों में सिमटता जा रहा है। सरकार की जल नीति पानी का व्यापार करने वाली कंपनियों को बढ़ावा दे रही है।

इसका फायदा उठाते हुए कोक, पेप्सी, स्वेज, बिवंडी जैसी बड़ी कंपनियां हमारा पानी हमें ही दूध के भाव बेचकर हमसे मुनाफा कमा रही हैं। इस समय देश में २६००० करोड़ रुपये के पानी का व्यापार है और वर्ष २०२० तक इसके बीस गुना होने की संभावना जताई जा रही है।

इसलिए तमाम विपरीत परिस्थितियों के बावजूद देश और समाज में इस प्रकार के मानस का निर्माण करना ही होगा कि लोगों को लगे कि जल के निजीकरण के खिलाफ खड़ा होना, दरअसल उनके खुद के हित में हैं। यह काम निजीकरण के खिलाफ सिर्फ उपदेश देने से नहीं होगा, बल्कि जल संग्रहण, उसके प्रबंधन की व्यावहारिकता से लोगों को अवगत कराने से होगा। जाहिर है, रचनात्मक ऊर्जा की सराहना वाली कार्यशैली जल सत्याग्रह का माहौल बना सकती है।

जल सत्याग्रह पानी के निजीकरण के विरोध में तो है ही, वह स्वदेषी स्वावलंबन के पक्ष में मजबूती से खड़ा है। चूंकि जल संरक्षण या पुनर्भरण का काम लोक सबलीकरण का कार्य है, इसलिए इससे जुड़ी संस्थाओं के हित में यह है कि वे महिला मंडल, युवक मंडल, पर्यावरण मित्र जैसे समूहों के गठन में योगदान दें। इससे समाज का प्रत्येक सदस्य किसी न किसी समूह से जुड़कर अपनी रचनात्मक सोच के जरिये जल के निजीकरण के विरूद्ध अपना योगदान कर सकता है।

– राजेन्द्र सिंह
रेमन मैगसेसे पुरस्कार से सम्मानित

Rajendra Singh's work in building up 'Johads' in the arid villages of Rajasthan has been a singular contribution in water management.

श्री राजेंद्र सिंहने राजस्थान के सूखे गांवों में जोहड़ों द्वारा जल प्रबंधन में अद्वितीय योगदान दिया है जिसे अंतर्राष्ट्रीय मान्यत्ता मिली है।

A Rally on the occasion of World Water Day:

A Pollution Eradication Rally was organised by Paryavaran Mitra in Hind Parisar on the occasion of "World Water Day".

Paryavaran Mitra President Kiran Bajaj and Anish Godha flagged off the Rally. Students and Teachers of Little Lamps School and Shiksha Prakashalaya and Staff of Paryavaran Mitra, JBF etc. participated in the rally.

The Students and Volunteers raised Slogans like "Pradushan Hatao, Bimari Mitao", "Jahan Hogi Safai, Wahan na hogi Dawai" etc.

Smt. Namita Godha and Smt. Niti Gupta were also present in the Rally.

विश्व जल दिवस पर रैली:

विश्व जल दिवस के उपलक्ष्य में हिन्द परिसर में 'प्रदूषण निवारण रैली' निकाली गई।

श्रीमती किरण बजाज तथा अनीस गोधा ने हरी झंडी दिखाकर रैली का शुभारम्भ किया। छात्रों एवं स्वयं सेवकों ने 'प्रदूषण हटाओ–बीमारी मिटाओ', 'जहाँ होगी सफाई–वहाँ न होगी दवाई', 'जल है तो कल है, जीवन का हर पल है' आदि नारों के साथ रैली उत्साह पूर्वक निकाली।

रैली में श्रीमती नमिता गोधा एवं श्रीमती नीति गुप्ता भी उपस्थित थीं।

A view of Pollution Eradication Rally
प्रदूषण निवारण रैली का दृश्य

Date : 23rd March 2007
Place : Hind Awasiya Colony
Organised by: Paryavaran Mitra

दिनांक : २३ मार्च २००७
स्थान : हिन्द आवासीय कॉलोनी
संयोजन : पर्यावरण मित्र

Anish Godha, Smt. Kiran Bajaj, Smt. Namita Godha and Km. Geetika Bajaj with Children in Rally

रैली में बच्चों के साथ अनीस गोधा, श्रीमती किरण बजाज, श्रीमती नमिता गोधा एवं कु. गीतिका बजाज

Most of the world's people must walk at least 3 hours to fetch water.

Competitions on World Water Day

A Painting Competition was organised on the topic of "Avoid Water Pollution" in Lord Krishna Public School, Shikohabad on World Water Day. In the competition a total of 90 Students of Class Nursery to 5 participated.

विश्व जल दिवस पर प्रतियोगिताएं

विश्व जल दिवस के अवसर पर शिकोहाबाद नगर के लार्ड कृष्णा पब्लिक स्कूल में 'जल प्रदूषण से बचाव' विषय पर पर पेन्टिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा नर्सरी से पांच तक के कुल ९० बच्चों ने भाग लिया।

If Gangotri continues to Melt, Ganga will soon dry up :

30 km. long and 65794 hectares broad lay the Gangotri glacier. Ganges has come out from the assimilation of Bhagirathi, which has come out from Gangotri glacier & Alaknanda River which has come out from the Meru Bamak glacier. Meru Bamak glacier which was once a part of Gangotri has started receding. From 1997-2000, it has receded upto 17.17 mtr per year. Due to ecological imbalance, if these two glaciers Meru Bamk & gangotri start receding, then it will not take a long time for the Ganges to dry up.

Today, the volume of water in Ganga has reduced to half. And if this situation continues, then the Ganges will completely dry down by 2025.The main reasons behind this are the continuous felling of trees in the low land areas and construction of road in the mountainous region. Because of this felling, Loo (Warm Winds) enters through the Bhagirathi mountains which increases the temperature of that area & results in the non-deposition of snow. As snow is not getting deposited, the existence of Himalaya rivers is in danger and its size is shrinking day by day.

Due to lack of water, there is no flood in the Ganga basin which leads to the groundwater depletion & fertility of the land also gets reduced.

- Sunderlal Bahuguna

गंगोत्री पिघलता रहा तो सूख जायेगी गंगा :

तीस किमी. लम्बे और ६५७.९४ वर्ग किमी. (६५७९४ हेक्टेयर) क्षेत्रफल में फैले गंगोत्री ग्लेशियर से निकलती भागीरथी और मेरू बामक ग्लेशियर से निकली अलकनंदा नदियों का मिलन गंगा को जन्म देता है। मजरू बामक ग्लेशियर जो कभी गंगोत्री का हिस्सा था, का आकार भी लगातार घट रहा है। वर्ष १९७७ से २००० तक इसके घटने की रफ्तार १७.१७ मीटर प्रतिवर्ष रही है। पर्यावरणीय असंतुलन के कारण यदि गंगोत्री और मेरू बामक ग्लेशियर यूं ही तेजी से पिघलते रहे तो एक दिन गंगा का सूखना तय है।

वर्तमान में गंगा में पानी पहले की अपेक्षा आधा रह गया है। यही स्थिति रही तो सन् २०२५ तक यह सूख जायेगी।

इसका प्रमुख कारण है तराई क्षेत्रों में भारी पैमाने पर वनों का कटना और पर्वतीय अंचल में सड़कों का निर्माण। जंगल कट जाने से मैदानी इलाके की लू भागीरथी की घाटी में आसानी से प्रवेश कर जाती है। इससे वहां का तापमान बढ़ रहा है जिसकी वजह से अब पहले की तरह बर्फ नहीं जमती। बर्फ न जमने के कारण हिमनदी का अस्तित्व खतरे में पड़ गया है और उनका आकार लगातार संकुचित हो रहा है।

पानी के अभाव में अब गंगा में पहले की तरह बाढ़ नहीं आती जिससे गंगा के मैदान में भूजल पूर्व की भांति अब रीचार्ज नहीं होता। इससे गंगा के मैदानी इलाकों की उर्वरता भी कम हो रही है।

–सुंदरलाल बहुगुणा

Ganga Action Plan:

It's not only unfortunate but really embarrassing that the most sacred river is losing its sacredness because of continuous pollution. The rivers engulfed in pollutants show our negligence towards the priceless natural heritage. Unfortunately, in many other rivers the mechanism to clear pollutants hasn't been successful as is also in case of the Ganges. Undoubtedly, even after spending one thousand crores the pollution in the Ganges is still at a dangerous level. According to the census report, pollution in Ganges in Uttar Pradesh is so dangerous that it is responsible for 10 percent of diseases in the area. This means that nothing concrete has been done towards the cleaning of Ganga. It would be better if Ganga action plan is implemented in such a way that it will be an example for other action plans to follow. No doubt, this can only be successful if proper supervision, accountability & transparency are honestly followed.

प्रदूषित गंगा कार्य योजना:

यह दुर्भाग्यपूर्ण ही नहीं बल्कि शर्मनाक भी है कि सर्वाधिक पवित्र नदी का दर्जा रखने वाली गंगा प्रदूषण के कारण अपवित्र सी होती जा रही है। इस नदी का प्रदूषण से ग्रस्त बने रहना यही बताता है कि हम भारतीय अपनी अनमोल प्राकृतिक विरासत से किस तरह खिलवाड़ कर रहे हैं? दुर्भाग्य से अन्य अनेक नदियों को प्रदूषण से मुक्त करने की योजनाओं की कुछ वैसी ही स्थिति है जैसी गंगा कार्य योजना की है।

इस बात का कोई औचित्य नहीं कि करीब एक हजार करोड़ रूपये खर्च कर देने के बावजूद गंगा में प्रदूषण का स्तर खतरनाक बना हुआ है। लोक लेखा समिति के मुताबिक उत्तर प्रदेश में गंगा का प्रदूषण इतना खतरनाक है कि करीब दस प्रतिशत बीमारियों का मूल कारण यही है। इसका मतलब है कि गंगा की सफाई के नाम पर कुछ ठोस कार्य हुआ ही नहीं।

बेहतर होगा कि गंगा कार्ययोजना को इस रूप में क्रियान्वित किया जाए कि वह अन्य ऐसी ही योजनाओं के लिए एक आदर्श साबित हो। निःसंदेह यह तब होगा जब कार्य योजना में निगरानी, जवाबदेही और पारदर्शिता के तत्वों को ईमानदारी से शामिल किया जाएगा।

Water Crisis:

Water crisis is the result of our desire to be modern, casualness and indulgence of the artificial life. Two-third of earth's surface is covered by water and the land accounts for only one-third of the same. Earth's hydrosphere consists of a total of 1.46 billion cubic kilometers of water. 97.5 % of this is in oceans, which because of being saline is of no use for the mankind. 1.5% is in frozen form in glaciers and ice capped mountains. Only 1% of water is left for our daily use. This utilizable water is in form of rivers, lakes, ponds and groundwater. Most of the terrestrial creatures are dependent on these sources of water. It should be noticed that even the saline water from all the seas plays a very important role in the occurrence of rain and gives the gift of life to the mankind on earth. This cycle of sea and surface water protects the life on earth by keeping the land and the forests green. The current water crisis has been created by mismanagement of this very water.

Studies related to water show that on an average a man needs more than 1700 cubic meters annually. If the water availability for per person goes below 1000 cubic meters, then its considered that scarcity of water exists in that area. And if this figure for water utilization goes below 500 cubic meters then drought like situation starts to build up in that area. In parts of Rajasthan, Gujarat, Andhra Pradesh and Orissa where water crisis exists, the water utilization per person has gone below 400 cubic meters. In areas with water crisis situation the continuous exploitation of water has resulted in the decline of water table from 500 ft. to more than 1500 ft. And this is definitely the result of our reckless utilization of ground water for the last 5 decades. Ground water has been over exploited because of the no restriction on installing tubewells after the 70s, construction of five star hotels and big colonies and expansion of cities. The ability to hold the surplus rain water has reduced because of the deforestation. The river channels are also getting narrower. And whatever water is left in the river has been made poisonous by the industrial waste. The simple solution for stopping the water crisis is to maintain the water level of the groundwater. Annually out of the total 8760 hours, it only rains for 100 hrs. Presently, all our problems are because of the lack of proper storage, appropriate utilization and management of this 100 hrs of water.

जल संकट:

जल संकट हमारे आधुनिक होने की ललक, लापरवाहियों और कृत्रिम जीवन से लिपट जाने का नतीजा है।

पृथ्वी की दो तिहाई सतह पानी से ढकी हुई है तथा इसका मात्र एक तिहाई भाग भूमि के रूप में है। पृथ्वी के इस जलमंडल में कुल १.४६ अरब घन किलोमीटर जल है। इसमें ९७.५ फीसदी जल महासागरों में है जो लवणीय होने के कारण हमारे लिए अनुपयोगी है। शेष १.५ फीसदी हिमनदों तथा पर्वत शिखरो कों आच्छादित करने वाली बर्फ के रूप में जमा है। लगभग एक फीसदी जल ही हमारे दैनिक उपयोग के लिए बचता है।

यह जल नदियों, झीलों, तालाबों तथा भूजल के रूप में है। अधिकांश स्थलीय जीव जल के इन्हीं स्रोतों पर निर्भर हैं। गौरतलब है कि समुद्र के जल का संपूर्ण भाग खारा होने के बावजूद बरसात के रूप में यह प्रकृति का अनुपम उपहार बनकर मानव को धरती पर जीवन देने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। समुद्र जल और भूमिगत जल का यही सुचक्र जमीन और जंगल को हरा–भरा करके लोगों के जीवन की रक्षा करता है इस जल के मानवीय कुप्रबंधन ने ही यह जल संकट उत्पन्न किया है।

पानी से जुड़े अध्ययन बताते हैं कि एक आदमी को वर्ष में औसतन १७०० घन मीटर से भी अधिक जल की आवश्यकता होती है। यदि व्यक्ति के लिए जल की उपलब्धता १००० घन मीटर से नीचे चली जाती है तो यह मान लिया जाता है कि वहां पानी का अभाव हो चला है। पानी के उपभोग का यही गणित जब ५०० घन मीटर से भी नीचे चला जाता है तो उस क्षेत्र में जल–अकाल जैसे लक्षण पैदा होने लगते हैं। राजस्थान, गुजरात, आंध्र प्रदेश और उड़ीसा में जल संकट जैसी स्थिति वाले शुष्क हिस्सों में प्रति व्यक्ति जल की उपलब्धता ४०० घनमीटर से भी नीचे चली गई है।

जल संकट वाले प्रदेशों में पानी के निरंतर दोहन से आज जल स्तर ५०० फुट से लेकर १५०० फुट नीचे चला गया। निश्चित ही यह हमारे पिछले पांच दशक में भू–जल के मनमाने दोहन का ही नतीजा रहा है। सत्तर के दशक के बाद ट्यूबवेल लगाने की खुली छूट, पंचसितारा होटलों एवं विशालकाय कालोनियों का निर्माण तथा नगरों के फैलाव इत्यादि से भू–जल का बहुत अधिक दोहन हुआ। इसके अतिरिक्त गहराते जल संकट के लिए वनों की विनाशलीला भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। वनों के कटाव से वर्षा के अधिकतर जल को संजोये रखने की क्षमता कम हुई है। यही कारण रहा है कि भूमि जल संग्रहण नहीं कर पा रही और झरने सूख रहे हैं। नदियों की धारा भी पतली हो चली है। जो कुछ नदियों का पानी बचा भी है उसे औद्योगिक कचरे ने जहरीला बना दिया।

जल संकट को रोकने का सीधा सा गणित भूमिगत जल स्तर को बनाए रखने का है। वर्ष में कुल ९७६० घंटों में से मात्र १०० घंटे ही बारिश होती है। आज की हमारी सारी मुसीबत इन सौ घंटों के पानी के विधिवत संग्रहण, कुशल प्रयोग और सुप्रबंधन न करने को लेकर ही है।

गूँगी गंगा

गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है
वह जूझ रही खुद से और बदहवास है
न अब वो रंगोरूप है न वो मिठास है
गंगाजली को जल नहीं गंगा के पास है ।।

शीशे में खुद को देख परेशान है गंगा
मैदान ही मैदान है मैदान है गंगा
कुछ ही दिनों की देश में मेहमान है गंगा
गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है ।।

न पीने के लिए है न नहाने के लिए है
गंगा भी आज खाने कमाने के लिए है
हर घाट यात्री को फँसाने के लिए है
बोरे में बँधी लाश छिपाने के लिए है ।।

- कैलाश गौतम

टीलों की प्यास मन से बुझाती चली गंगा
पेड़ों की छाँह-छाँह छहाँती चली गंगा
घर-घर का सारा पाप बहाती चली गंगा
उजड़े हुए नगर को बसाती चली गंगा
गंगा की बात क्या करूँ गंगा उदास है ।।

देखिए न आज क्या गंगा का हाल है
रहना मुहाल इसका जीना मुहाल है
गंगा के पास दर्द है आवाज़ नहीं है
मुँह खोलने का कुल में रिवाज नहीं है।।

गंगा नहीं रहेगी यही हाल रहा तो
कब तक यहाँ बहेगी यही हाल रहा तो
अब लीजिए संकल्प ये बीड़ा उठाइए
गंगा पर आँच आ रही गंगा बचाइए ।।

लोक भाषा के अत्यन्त प्रसिद्ध कवि, हिन्दुस्तानी एकेडमी, इलाहाबाद के अध्यक्ष स्व० श्री कैलाश गौतम ने उपरोक्त रचना अपने असामायिक निधन से पूर्व हिन्द परिसर में आयोजित पर्यावरणीय काव्य समारोह में पढ़ी थी।

The disappearing Himalayas

2035 is the year when the Himalayan glaciers may totally disappear, causing catastrophic disruptions.

Increasing land infertility

The glacial meltdown will first result in rivers being flooded and then drying up. The Ganga delta would turn infertile.

Decreasing water availability

38% drop in per capita water availability by 2050 for Indians as great drys become frequent.

The drowning cities

Sea levels will rise 40 cm. higher by 2100 and 50 million people in coastal India would be displaced by flooding.

Source: India Today

Bio-Manure

following nos. of Bio Manure Pits have been made as on 31st March 2007:

Vermi Compost : In Nagla Sunder 2, In Nagla Bhoop 1, In Nagla Chanda 2, In Bateshwar 1, In Hind Parisar 2, In Roopaspur 1, and in Chhatanpura 1. Total 11 Nos.

Bhu-Nadep : In Nagla Bhoop 5, In Bateshwar 2, Bakalpur 23, in Lachhpur 1, In Nagla Lokman 6, in Brahmabad 1, In Chhatanpura 4, Roopaspur 2, Nagla Girdhari 1 and Hind Parisar 2. Total 47 Nos.

जैविक खाद

मार्च माह २००७ तक निम्न जैविक खाद प्रकल्पों का निर्माण हो चुका है :

वर्मीकम्पोस्ट प्रकल्प : नगला सुन्दर में २, नगला भूप में १, नगला चंदा में २, बटेश्वर में २, हिन्द परिसर में २, रूपसपुर में १ तथा छटनपुरा में १ सहित कुल ११

भू–नाडेप प्रकल्प : नगला भूप में ५, बटेश्वर में २, बाकलपुर में २३, लाछपुर में १, नगला लोकमन में ६, ब्रह्माबाद में १, छटनपुरा में ४, रूपसपुर में २, नगला गिरधारी १, तथा हिन्द परिसर में २ सहित कुल ४७ भू–नाडेप कम्पोस्ट प्रकल्पों का निर्माण किया जा चुका है।

Membership Drive

Membership of Paryavaran Mitra is increasing. The total number of members till the publication of this newsletter is 3418 with 4 Honorary Life Members, 30 Life members, 165 Patron members and 3197 Ordinary Members, 22 Ordinary Student Members.

सदस्यता अभियान

पर्यावरण मित्र की सदस्यता बढ़ रही है, इस न्यूज़लैटर के प्रकाशित होने तक कुल सदस्यों की संख्या ३४१८ तक पहुँच चुकी है। इनमें ४ मानद आजीवन सदस्य, ३० आजीवन, १६५ संरक्षक तथा ३१९७ सामान्य सदस्य, २२ सामान्य छात्र सदस्य शामिल हैं।

A youthspeak

"As a 17 year old student of the Cathedral and John Connon School, I came to Shikohabad, Uttar Pradesh to work with the elite NGO Paryavaran Mitra (Friends of Environment) and the Jamnalal Bajaj Foundation.

I realized awareness assumes the utmost importance when environment comes into the picture. Paryavaran Mitra promotes this vital aspect by writing environmental messages on walls in villages in their local languages, organizing tree plantation drives that simultaneously promote the benefit of trees, endorsing cleanliness in schools, homes and factories and encouraging a pollution free environment. This two year old organization also believes in networking. It works with NGO's like the Jamnalal Bajaj Foundation, a 30 year old organization that endorses the economic welfare of the people by supporting low cost toilets, non-polluting Gobar Gas Plants, weaving and tailoring. It strives to educate by setting up schools including ones that give vocational training.

Through my experience, I realized that though the work of a single man is a drop in the ocean, it is imperative to realize that every drop counts. Individuals must realize that it is not possible to keep exploiting the environment without any repercussions. The environment must, in fact, be protected and cured of the many wounds that we have been inflicting on it since time immemorial."

Anish Godha
26th March, 2007

Contact

Paryavaran Mitra, Dr. Subodh Dubey, Hind Lamps Parisar, Shikohabad-205141 Phone: (05676) 238797, 9837885143
E-mail: hindlamps@sify.com
Mumbai Unit: Paryavaran Mitra, K. Raghunath, Bajaj Electricals Limited, M.G. Road, Mumbai-400001 Phone: (022) 22043733
E-mail: paryavaran_mitra@bajajelectricals.com
Website: www.paryavaranmitra.com

संपर्क

पर्यावरण मित्र : डा. सुबोध दुबे, हिन्द लैम्प्स परिसर, शिकोहाबाद–२०५१४१, फ़ोन : (०५६७६) २३४५०१-५०३, २३४४००
ई–मेल hindlamps@sify.com
मुंबई इकाई : पर्यावरण मित्र : के. रघुनाथ, बजाज इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, एम.जी. रोड, मुंबई–४०० ००१. फ़ोन : (०२२) २२०४३७३३
ई–मेल: paryavarn_mitra@bajajelectricals.com
वेबसाईट: www.paryavaranmitra.com